Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II

on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

publishjournal.co.in

Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue XX, Vol. II Octomber 2019 | Peer Reviewed SJIF | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

1.	भारतीय समाज और विकलांग विमर्श डॉ. ठाकूरदास.एम.बी.	10
2.	आपका बंटी उपन्यास में बंटी की मानसिक विकलांगता प्रा.उषमवार जी.बी.	14
3.	विकलांगता और आत्मविश्वास डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे	17
4.	भारतीय समाज में विकलांगों की समस्याएँ डॉ. रेविता बलभीम कावळे	21
5.	अलका सरावगी का उपन्यास 'कोई बात नहीं' में विकलांगता एवं आत्मविश्वास डॉ.चन्नाळे विनोद प्रभाकर,	26
6.	विकलांग व्यक्तिंचे मराठी कादंबरीतून आलेले चित्रण प्रा. देशमुख बिभीषण	29
7.	विकलांगो की सामाजिक स्वीकार्यता परसमाजशास्त्रीय दृष्टिकोण धर्मेन्द्र सिंह यादव	34
8.	विकलांग विमर्श : स्वरूप एवं अवधारणा प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	39
9.	अपंगाचे विश्व: वेदन आणि आत्मविश्वास प्रा.डॉ.सा.द.सोनसळे	42
10.	मानसिक विकलांगता : अभिशाप या समस्या प्रा. डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा	45
11.	हिन्दी चलचित्रों में दृष्टि–विकलांग विमर्श प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	50
12.	विकलंगता, महाभारत के पात्र - विचार विमर्श प्रा. डॉ. शोभा जगन्नाथराव यशवंते	56
13.	कथा साहित्य में विकलांग विमर्श प्रा.डॉ.जाधव के.के.	59
14.	हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श डॉ. सुभाष प्रल्हादराव इंगळे	62
15.	हिंदी कथा-साहित्य में विकलांग चरित्र डॉ.शेखर घुंगरवार	65
16.	श्रवण कौशल का दृष्टिबाधित बालकों के लिए महत्त्व : डॉ.काळे बी.एम.	69
17.	हिंदी साहित्य : सिनेमा और विकलांग का अंतसंबंध	72

Scanned with OKEN Scanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

विकलांगता और आत्मविश्वास

डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
प्रपाठक, हिंदी विभाग, शि.म.ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कळंबजिला- उस्मानाबाद

मनुष्य के पास पाई जानेवाली सम्पदाओं में बलिष्ठता, सुन्दरता, बुध्दिमत्ता, सम्पन्नता की जानकारी सभी को है। उन्हीं के आधार पर कई तरह की सुख-सुविधाओं एवं सफलताओं का सुयोग बनता है। इन सर्व-विदित सम्पदाओं से भी एक और बडी क्षमता है जिस के प्रभाव और परिणाम की जानकारी बहुत थोडे ही लोगों को होती है। वह क्षमता है जीवटा यह बात खासकर विकलांग व्यक्तियों में होती है। इतिहास में देखा जाए तो ऐसे बहुत सारे व्यक्ती है, जिन्होंने अपनी विकलांगता पर विजय पायी है। उन्होंने अपने जीवन में लक्ष्य प्राप्ती के लिए विकलंगता को बाधा बनने नही दिया।

ईश्वर यदी किसी से कुछ छीनता है तो उसके बदले में कुछ और प्रदान कर देता है। जो व्यक्ति उस और को पहचान कर लेता है उसका जीवन सहज तथा हो जाता है। उसकी नि:शक्तता सशक्तता में बदल जाती है। विकलांगता के शिकार देश-विदेश में महान दार्शनिकों, साहित्यकारों, कलाकारों, खिलाडियों ने ईश्वर प्रदत्त उस और के सहारे ही उत्कृष्टता प्राप्त की। इसमें उनकी दृढ इच्छाशक्ति, जिजीविषा, आत्मविश्वास, जीवन-राग और अभ्यास का योगदान तो रहा ही है। दूसरों का प्रोत्साहन और परामर्श भी शामिल है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि प्रोत्साहनों और विमर्शों ने भी विकलांगों की दुनिया को बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कभी लोगों ने नि:शक्त जन में सशक्तता का उन्मेष दुलार, प्यार से समझा-बुझाकर किया है तो कभी उनके अंत:स्तल पर मार्मिक प्रहार करके। जाहिर है, जब किसी के मर्म पर प्रहार होता है तब व्यक्ति अपने को सामर्थ्यवान बनाने के लिए हिम्मत जुटाता ही है। कभी-कभी तो यह मान उपलब्धियों का कारक बन जाता है।

शारीरिक अथवा मानसिक अक्षमता विकलांगता है। यह व्यक्ति के मन में निराशा उत्पन्न करती है, हीनता की भावना भरती है। फलत: व्यक्ति अकर्मण्य एवं आलसी हो जाता है, अपने को धरती का बोझ समझता है। वह ईश्वर एवं स्वयं को कोसता फिरता है, लेकिन यदि उसे उपयुक्त वातावरण एवं सम्यक् प्रेरणा-प्रोत्साहन मिले तो वह उपलब्धियों के शिखर पर आसीन हो सकता है, क्योंकि यह अक्सर देखा गया है कि एक अंग यदि नि:शक्त होता है तो दूसरा अधिक सशक्त होता है, जरुरत इस बात की होती है कि उस दूसरे अंग को अधिक सचेष्ट, क्रियाशील एवं कार्य-कौशल संपन्न बनाया जाए। दीर्घतमा, अष्टावक्र, शुक्राचार्य, जायसी, सुरदास, राणा सांगा, रणजितसिंह, विनोद कुमार मिश्र, रवींद्र जैन, सुधाचंद्रन, राजेन्द्र यादव, वल्लतोल, प्रभा साह, अंजली अरोडा, रितु रावल, बाबा आमटे, होमर, मिल्टन, बायरण, वाल्टर स्काट, मार्सेल प्राउस्ट, हेलेन केलर, थामम अल्वा एडिसन, लुईबेल, स्टीफन हाकिंग्स लारा ब्रिजमैन, फ्रेंकलीन डिलानों रुजवेल्ट आदि ने विकलांगता के बावजूद जो उपलब्धियाँ अर्जित की है, उसकी चकाचौंध से सारा संसार जगमग हो यह इसलिए भी संभव हो सका कि उन्होंने अपनी भीतरी शक्ति को पहचाना और उसे सचेष्ट तथा क्रियाशील बनाया। महाकवि सुरदार को यदि वल्लभाचार्य ने यह नहीं कहा होता, ``सूर हो के काहे घिघियात हो, कुछ भगवान भजन कर`` तो शायद वे सूरसागर के रचियता नहीं बने होते। जायसी एक नयन वाले ``एक नयन कवि मुहम्मद गुनी`` तथा कुरुप थे। उनकी कुरुपता पर जब

Scanned with OKEN Scanner

शेरशाह सूरी हँस पड़ा तब वह भीतरी प्रेरणा ही थी जिसके बल पर मलिक मुहम्मद जायसी ने कहा, ``मोहि का हँससि कि कोहरहि?`` (तू मेरे ऊपर हँसा था या उस कुम्हार याने ईश्वर पर, तब शेरशाह को लज्जित होकर माफी माँगनी पड़ी| जायसी ने अपनी विकलांगता को कोसने के बजाए उसे महिमा मंडित ही किया है|

कहा जाता है कि `जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि` अर्थात जिसकी जैसी दृष्टी है उसको वैसा ही दिखाई देता है| यह संसार किसी को सुखद लगता है, तो किसी को दुखद| महान नाटककार तथा सुविख्यात विद्वान शेक्सपियर ने कहा है, `Man is as, As he thinks` अर्थात मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही होताहैं इसलिए इस सोच विचारवाले मन को सदृढ रखना अत्यावश्यक है| मन की हार और जीत ही उस व्यक्ति की हार और जीत है| कार्य की सफलता के लिएं मन की सदृढता जरुरी है| विकलांगता एक अवांछित स्थिति है| अनिमंत्रित घटना है| डॉ. श्रीमती चंद्रावती नागेश्वर जी ने कहा है, ``सभी विकलांग कुछ विशेष हुआ करते है| उनकी विकल अंग की शक्ती अन्य लोगों को अतिरिक्त क्षमता देती है|``[1] दुनिया में ऐसे विश्व विख्यात विकलांग है कि उनकी विकलांगता उनकी लक्ष्य प्राप्ति में बंधा नहीं बन पायी तो कुछ विशेष बनने में सहायक सिध्द हुई है|

1) कवि सूरदास :-

कृष्णभक्ति शाखा के प्रवर्तक महाकवि सूरदास जन्मांध थे| परन्तु उनके काव्याकाश को देखते हुए ऐसा लगता है कि वे जन्मांध नहीं होंगे| उन्होंने सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी जैसी महान रचनाएँ रचि है| वे अपने भावों को ब्रज भाषा के माध्यम से व्यक्त करते है, ``मैया कबहिं बढैगी चोटी? कितीबर मोहिं दूध पियनभई, यह अजहुँ है छोटी|``[2] उनकी भाषा में कोमलकान्त पदावली, सरलता और प्रवाहमतयता है| उनके आराध्य भगवान श्रीकृष्ण की बाललीला का ऐसा वर्णन किया है कि वह आँखों वालों को भी असंभव है| सूरदास जैसे विकलांग से परम ब्रम्ह भगवान प्रेम करते है, ``जब परम ब्रम्ह परमात्मा, सूरदास जैसे विकलांग से सहानुभूति और प्रेम करते थे| उन्हें अंतः चक्षु प्रदान किये थे| उनकी लाठी लेकर आगे आगे चलते थे| उनके कीर्तन और भजन को प्रेम से सुनते थे| तो हमें विकलागों से क्या घृणा| हमे भी उनसे प्रेम करना चाहिए| सहानुभूति रखनी चाहिए|``[3] सूरदास की वाणी में दुग्धामृत था| सूरदास की वाणी में जो मीठास और अक्षय प्रेरणा का स्त्रोत है वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है| उनके सन्दर्भ में प्रो. तुषार राधाकिशन हेड़ाव जी ने कहा है, ``सूरदास का जीवन दर्शन ही सूरदास ने अपने अनुभव की आँखों से देखा था| सत्य पर आधारित होने के कारण उनकी जीवन विषयक धारणाएँ विशिष्ट है| वे चाहते है, `अपने मार्ग, अपने अध्ययन, अपनी फिलासाफी के बिना कोई सच्चा कलाकार नहीं हो सकता| अपनी आँखों से जीवन देखों, अपने अनुभव से उसे जाँचो| जैसा पाओ वैसा लिखो|``[4]

2) कवि जायसी :- सूफी काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि जायसी विश्वविख्यात विकलांग चरित्र है| इन्होंने पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम जैसे प्रसिध्द महाकाव्य लिखे है| इतना ही नहीं तो वे हिन्दु-मुस्लिम एकता के सेतु थे| इन्होंने हिंदू प्रेमकथा द्वारा अध्यात्मिक तत्व की अभिव्यंजना की| अवधी भाषा में लिखे गए `पद्मावत` को महाकाव्य के स्थान पर प्रतिष्ठित किया है| मलिक मुहम्मद जायसी के सन्दर्भ में हरिकृष्ण तैलंग का यह वक्तव्य अत्यंत सही प्रतीत होता है- ``पद्मावत जैसे खूबसूरत महाकाव्य लिखनेवाले जायसी शक्ल-सुरत से बडे बदसुरत थे| बचपन में हुए चेचक के रोग ने उनकी एक आँख एक कान छीन लिया था| चेहरे और शरीर पर भद्दे, काले गहरे दाग बन गये थे| पन उनमें काव्य प्रतिभा अद्वितीय थी| उनके हृदय में ज्ञान और प्रेम दोनों के सागर हिलोरे लेता था| सहजता, उदारता और सहिष्णुता उनमें कुट-कुटकर भरी थी| वह धन सम्पत्ति से गरीब थे पर मानविय गुणों और काव्य क्षमता के बादशाह थे|``[5]ऐसे महान कवि जायसी

Scanned with OKEN Scanner

एक आँख से अन्ध थे लेकिन अत्यंत गुणी कवि थे| उनका कार्य ही नेत्र दर्पण के समान है, इसलिए उनके भावो-विचारों में भी पवित्रता है| इतना ही नहीं तो उनका बायां कान भी नहीं था| अत: वे दोनों अंगो से विकलांग होते हुए भी हिंदी साहित्येतिहास में अजरामर है| उनके सन्दर्भ में यह वक्तव्य अत्यंत सही प्रतित होता है- ``जायसी विकलांग होकर भी भारतीय संस्कृति के संवाहक है| उनकी विकलांगता उन्हें प्रेरणा देती है कि विकलांग व्यक्ति अपने समान अपने देश के लिए भी क्या नहीं कर सकता|``[6]

3) एकलव्य :-

गुरु द्रोणाचार्य ने शिष्य एकलव्य से गुरुदक्षिणा के रुप में उसका अंगूठा मांगा ताकि वह विकलांग होकर बाण चलाने में असमर्थ हो जाए| लेकिन एकलव्य भी दृढ संकल्पी था| उसने तर्जनी और मध्यमा जैसी अंगुलियों के सहारे तीर चलाने का अभ्यास करके पूर्वरत दस धनुर्धारी बन कर सफलता हासिल कर विश्व विख्यात बन गया|

4) पृथ्वीराज चौहान :-

नेत्रहीन पृथ्वीराज चौहान ने प्रतिशोध हेतु अपने परम वैरी मोहम्मद गौरी की आवाज के आधार पर बाण चलाकर उसके कंठ को एक बाण बांध कर बदला ले लिया था| उनके संदर्भ में यह वक्तव्य उध्दृत है- ``युध्द के मैदान में पकड़े जाने के बाद पृथ्वीराज चौहान के दोनों आँखे फोड दी गई| फिर भी वे अपने आत्मबल, मनोबल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुए|``[7] मनुष्य अपने आत्मविश्वास के बल पर अपने लक्ष्य को हासिल कर सकता है इसका उत्तम उदहारण पृथ्वीराज चौहान है|

5) हेलन कीलर :-

विश्वविख्यात प्रतिभाशाली अमेरिकी लेखिका हेलन कीलर विकलांग स्त्री चरित्र है| जन्म के 19 माह के बाद मन और मस्तिष्क के गहर आघात से बोलने सुनने की शक्ति क्षीन होने की वजह से विकलांग होती है| हर चीज को देखते ही तोड-फोड देती है| हेलन कीलर के संदर्भ में कहा गया है कि, ``जन्म के समय तो बच्ची सुन्दर और पूर्ण स्वस्थ थी| पर कौन सोच सकता था कि गुडिया सी मन को मोहनेवाली वह बच्ची दो साल की आयु पाने से पहले ही अन्धी, गूँगी और बहरी हो जावेगी|``[8] परन्तु एक बार अचानक आश्चर्य जनक आशा का संचार हुआ| वह कहती है, ``मैं विकलांगों और स्त्रियों की हितचिंतक हूँ| मैं एक गूँगी, बहरी और अंधी विकलांग स्त्री हूँ| मेरा नाम हेलन कीलर है|``[9] उन्होंने अपने जीवन में छह पत्रिकाओं का सम्पादन किया|

6) महाराणा संग्राम सिंह :-

महाराणा संग्राम सिंह को जब मेवाड के राज सिंहासन पर अभिषिक्त किया गया जब उनके शरीर पर अस्सी से अधिक घाव थे| इतना ही नहीं तो उन्हें एक आँख से वंचित होना पड़ा था और एक पैर भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हुआ था| परन्तु उनके अदम्य साहस ने भारत वर्ष के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ बनाया| सन 1509 में मेवाड के शासक बनने के बाद उन्होंने अनवरत संघर्ष कर मेवाड की किर्ती फैलाई| उनका अदम्य साहस, अपार शूरावीरता अगाध राष्ट्रप्रेम और कर्तव्य निष्ठा ने राणा संग्राम सिंह को चक्रवर्ती सम्राट की प्रसिध्दि मिली|

7) स्टीफन हार्किंग्स :-

ब्रिटिश के महान गणितज्ञ एवं भौतिक विज्ञानी स्टीफन हार्किंग्स जी ने विकलांग होते हुए भी ब्रम्हाडिकी (कास्मोलॉजी) के विज्ञान में मूलभूत योगदान दिया| उन्हें `लू गेटरिंग` रोग ने ग्रस्त किया| नर्वस सिस्टम एवं मस्कूलर को कमजोर करनेवाले

Scanned with OKEN Scanner

इस रोग ने अंततः उन्हें व्हीलचेयर पर पूर्णतः निर्भर बना दिया| केम्ब्रिज ने उनकी प्रतिभा को पहचानकर उनकी बढती विकलांगता के बावजूद भी अध्ययन जारी रखनके लिए प्रेरित किया| ``विकलांग स्टीफन हाकिंग्स 1989 में संडे टाइम्स द्वारा साहित्य के विशेष पुरस्कार के लिए चुने गए| इसी वर्ष ब्रिटानिका पुरस्कार के लिए भी चुने गए|``[10] उनका विवाह भावनात्मक जीवन का महत्त्वपूर्ण कदम था| समय के चलते उनके विकलांगता बढती गयी| फिर भी अपनी विकलांगता को उन्होंने अपने कार्यों में बाधा नहीं बनने दिया| अतः स्टीफन हाकिंग्स जहाँ अपनी विलक्षण प्रतिभा और कडे परिश्रम से दुनिया को नवीनतम जानकारी देने में सिध्दहस्त हुए|

8) नृत्यांगना सुध्दा चन्द्रन :-

`नाचे मयुरी` की नृत्यांगना तथा अभिनेत्री के रुप में विख्यात सुध्दा चन्द्रन सभी विकलांगो की प्रेरणा है| छह साल की छोटी आयु में ही एक ॲक्सीडेंट में उन्होंने अपना एक पैर खो दिया| परंतु इस विकलांगता पर विजय प्राप्त कर फिर से स्टेज पर खडी रही| उन्होंने नाटक, सिरियल में काम किया तथा अपनी डांस अकेडमी में भरत नाट्यम की क्लास लेती है|

इस प्रकार विकलांग होते हुए भी सभी क्षेत्रों में आज वे सभी प्रेरणादायी चरित्र बन गए है| विकलांगो की नव जीवन देने एवं समाज की मुख्यधारा में शामिल कर उन्हें प्रगतिगामी बनाने में विकलांग चरित्र प्रेरणादायी है|

संदर्भ :-

1. हिंदी साहित्य एवं विकलांग-विमर्श - शोधालेख, डॉ. छोटे लाल गुप्ता
2. विकलांग विमर्श - संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. 112
3. काव्य गौरव- संपादक डॉ. रामदरश मिश्र, पृत्र 59
4. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. 34
5. विकलांग विमर्श - संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. 175
6. अपंग जिनसे दुनिया दंग - हरिकृष्ण तैलंग, पृ. 27
7. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. 35
8. विकलांग विमर्श - संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. 114
9. अपंग जिनसे दुनिया दंग - हरिकृष्ण तैलंग, पृ. 66
10. विकलांग विमर्श - संपादक डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. 32
11. विकलांग विभूतियों की जीवनगाथाएँ - विनोद कुमार मिश्र, पृ. 249

Scanned with OKEN Scanner